स्वामी दयानन्द सरस्वती

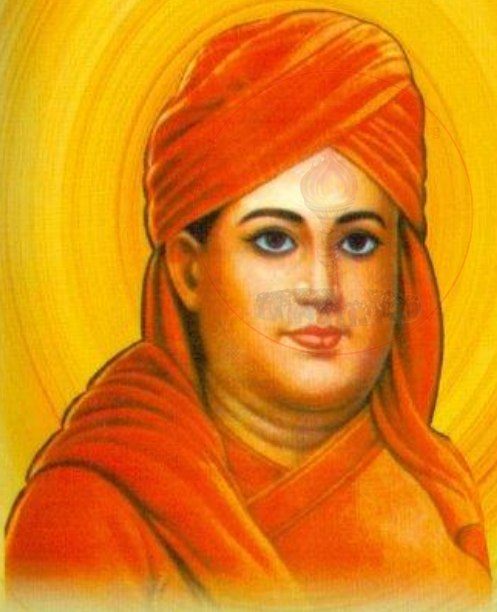

– श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

हिंदू जाति के उद्धारकर्ता— स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती जिस समय राजस्थान के राजाओं को देश-भक्ति और समाज-सुधार की शिक्षा देने के लिए विभिन्न रियासतों में भ्रमण कर रहे थे, उस समय जोधपुर के महाराज यशवंतसिंह ने उनको अपने यहाँ आने को आमंत्रित किया। स्वामी जी के कई शुभचिंतकों ने उनको जोधपुर न जाने की सलाह दी, क्योंकि वहाँ की आंतरिक स्थिति उनके अनुकूल नहीं थीं और किसी कुचक्र में फँस जाने का अंदेशा था। पर स्वामी जी सदा साहस और निर्भीकता से कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते आये थे, इसलिए वे इस प्रकार की आशंकाओं से तनिक भी न घबड़ाये और अपने धर्म-प्रचार के कर्त्तव्य का पालन करने के लिए नियत समय पर जोधपुर पहुँच गए।

पर लोगों की आशंका निर्मूल न थी। स्वामी जी परम स्पष्टवक्ता थे, उनके धार्मिक-सुधार संबंधी भाषणों को सुनकर कई पुराने ढर्रे के पंडित, साधू, महंत आदि उनके विरोधी बन गये। एक दिन महाराज की वेश्या नन्हींजान को उनके समीप देखकर इसका भी विरोध किया और कह बैठे—"राजन् ! आप जैसे सिंहों के समीप इस तरह की कुतिया शोभा नहीं देतीं।" महाराज तो यह सुनकर केवल कुछ संकुचित होकर रह गए, पर जब यह बात नन्हींजान ने सुनी तो वह जी-जान से इनकी दुश्मन बन गई और उसने अन्य विरोधियों से मिलकर इनके रसोइया जगन्नाथ को बहकाया। यद्यपि वह बहुत वर्षों से इनके पास रहता था और बड़ा विश्वासपात्र माना जाता था, पर उसने कुमति में पड़कर दूध में विष मिलाकर स्वामी जी को पिला दिया। थोड़ी ही देर बाद पेट में भयंकर कष्ट प्रतीत होने लगा। स्वामी जी ने वमन-विरेचन की योग क्रियाओं से दूषित पदार्थ को निकाल देने की चेष्टा की, पर विष तीव्र था और अपना काम कर चुका था। यह देखकर दूसरे दिन से चिकित्सकों द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इलाज किया जाने लगा, पर उससे भी कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। केवल इतना अंतर पड़ा कि, जहाँ बिना चिकित्सा के वह कुछ घंटों या एक-दो दिन में देहांत कर देता, औषधियों के कारण उसका असर कुछ घट गया और एक महीना तक स्वामी जी को जलन और दर्द का कष्ट भोगना पड़ा।

इस घटना में एक गूढ़ प्रसंग भी था, जिसका रहस्य उस समय किसी को विदित न हो सका। स्वामी जी को जगन्नाथ द्वारा दूध में जहर देने की बात का अनुमान थोड़ी देर बाद ही हो गया था। उन्होंने समय पाकर उसे अपने पास बुलाया और सच्ची बात बताने को कहा। उनके आत्मिक प्रभाव से जगन्नाथ काँप गया और अपना अपराध स्वीकार कर लिया, पर उसे दंड दिलाना अथवा बुरा-भला कहना तो दूर, स्वामी जी ने उसे अपने पास से कुछ रुपये देकर कहा—"अब जहाँ तक बन पड़े शीघ्र से शीघ्र तुम जोधपुर की सरहद से बाहर निकल जाओ, क्योंकि यदि किसी भी प्रकार इसकी खबर महाराज को लग गई तो तुमको बिना फाँसी पर चढ़ाए न मानेंगे।" बस जगन्नाथ उसी क्षण वहाँ से बहुत दूर चला गया, और कहीं गुप्त रूप से रहकर उसने पापी प्राणों की रक्षा की।

स्वामी जी के जीवन ही यही घटना उनको महामानव सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। कोई सामान्य मानव तनधारी कभी अपने अपकारी को इस तरह क्षमा नहीं कर सकता, वरन् सौ में से निन्यानवें व्यक्ति किसी से साधारण बैर-भाव हो जाने से ही उसके नाश की कामना और प्रयत्न करने लग जाते हैं। पर "महामानवों" अथवा "दैवी विभूतियों" की ही यह सामर्थ्य होती है। महापुरुष ईसा और महात्मा गाँधी का नाम इसीलिए संसार में चिरस्थायी है, क्योंकि उन्होंने अपने परम शत्रुओं का भी कभी अहित चिंतन नहीं किया और सदा उनको क्षमा करते रहे। स्वामी दयानंद ने भी ऐसी ही अलौकिक उदारता का उदाहरण संसार के सामने उपस्थित किया।

साधारण से असाधारण बनने का मार्ग—

ऐसी असाधारण महानता किसी को सहज में प्राप्त नहीं हो जाती। मूलशंकर (स्वामी दयानंद का पूर्व नाम) एक सामान्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्राह्मण—सरकारी अधिकारी के पुत्र थे। १४-१५ वर्ष की आयु तक उनका जीवन साधारण ग्रामीण बालकों की तरह अपने गाँव टंकारा (मोरवी, काठियावाड़) में व्यतीत हुआ। तब दो-एक ऐसी घटनाएँ हुई, जिनसे उनके हृदय में ईश्वर और धर्म की वास्तविकता जानने की जिज्ञासा हुई। उसी की प्रेरणा से वे सच्चे साधुओं और योगियों की खोज में बिना किसी को बताए घर से निकल पड़े और कई वर्ष तक जंगलों और पर्वतों की खाक छानकर मथुरा में स्वामी विरजानंद जी के शिष्य बन गये। विरजानंद जी वैदिक साहित्य के प्रसिद्ध ज्ञाता थे। उनके पास दो-तीन वर्ष अध्ययन करके और गुरु दक्षिणा के रूप में वैदिक सिद्धांतों के प्रसार की प्रतिज्ञा करके, वे देश-भ्रमण को निकल पड़े। उस अंधकार-युग में—जब कि देश की समस्त जनता तरह-तरह की निरर्थक और हानिकारक रूढ़ियों में ग्रस्थ थी, जिससे स्वामी जी को पग-पग पर लोगों के विरोध, विघ्न-बाधा और संघर्ष का सामना करना पड़ा। पर वे अपनी अजेय शारीरिक और मानसिक शक्ति, साहस और दृढ़ता के साथ अपने निश्चित मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहे, और अंत में अपने लक्ष्य की प्राप्ति में बहुत कुछ सफल हुए।

"पाखंड खंडिनी पताका"

अपने गुरु से वैदिक-धर्म के प्रचार की प्रतिज्ञा करके और कितने ही स्थानों में भ्रमण करके स्वामी जी सन् १८६६ के कुंभ में हरिद्वार पहुँच गये। उनका विचार था कि छोटे-छोटे स्थानों में दो-दो चार व्यक्तियों को समझाते-फिरने की अपेक्षा कुंभ में इकट्ठे विद्वानों और महात्माओं से धर्म-चर्चा और विचार-विनिमय करके उनको अपने विचारानुकूल क्यों न बनाया जाए, जिससे देश भर में एक ही बार में वैदिक सिद्धांतों की चर्चा फैल जाए। पर जब उन्होंने कुंभ की अपार भीड़ और साधुओं के विशाल अखाड़ों को देखा तो एक बार तो उनका साहस टूटने लगा। वे विचार करने लगे कि इतने बड़े और मीलों तक फैले हुए समुदाय में अपनी बात कैसे सुना सकूँगा ? पर उसी रात्रि को स्वप्नावस्था में उनको प्रतीत हुआ कि कोई दैवी पुरुष आदेश दे रहे हैं—'हिम्मत को मत छोड़, सब काम, पूरा हो जाएगा। क्या सूर्य अकेला ही संसार के अंधकार को दूर नहीं कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देता ?" बस प्रातःकाल उठते ही उन्होंने अपने हृदय में नवजीवन का संचार होते अनुभव किया। उन्होंने अपने छोटे-से निवास स्थान के आगे एक झंडे पर "पाखंड खंडिनी पताका" लिख कर गाड़ दिया और अपने विचारों को व्याख्यान के रूप में प्रकट करने लगे। उस समय तक लोगों ने किसी संन्यासी के मुख से मूर्ति-पूजा का विरोध, श्राद्धों का निराकरण, अवतारों में अविश्वास, पुराणों का काल्पनिक होना आदि बातें नहीं सुनी थीं, इसलिए इस दृश्य को विस्मयपूर्वक देखते थे। कुछ लोग इसे कलिकाल का एक लक्षण बतलाते थे। कुछ पंडित नामधारी स्वामी जी को 'नास्तिक' की पदवी भी देने लग जाते थे। कुछ पंडितों और साधुओं ने स्वामी जी के विरुद्ध भाषण देना आरंभ कर दिया और वे उन्हें तरह-तरह की गालियाँ देने लगे। पर स्वामी जी अपने काम में संलग्न रहे। कई पंडित और साधू उनके स्थान पर वाद-विवाद करने के उद्देश्य से भी आते थे, पर उनकी युक्तियुक्त बातों से निरुत्तर होकर चले जाते थे। यद्यपि वहाँ कोई उनका अनुयायी तो न बना, पर उस धार्मिक जन-समुदाय में एक प्रकार की हलचल मच गई और अनेक लोग धर्म की सच्चाई के संबंध में विचार करने लग गये।

शास्त्रार्थ और शास्त्रार्थ—

पर यह कार्य सरल न था। उस समय को सौ वर्ष बीत जाने पर और इस बीच में आधुनिक शिक्षा तथा ज्ञान-विज्ञान की अनेक गुनी वृद्धि हो जाने पर भी अभी तक लोगों की धार्मिक तथा सामाजिक मनोभूमि में काफी जड़ता देखने में आती है। कितनी ही प्राचीन प्रथाओं की हानियों को देखते-समझते हुये भी लोग उनको छोड़ने को तैयार नहीं होते। जात-पाँत का जंजाल, छुआछूत का पागलपन, विवाह-शादियों में अपव्यय का उन्माद, बाह्य पूजा-पाठ का ढोंग आदि कितनी ही बातों की सदोषता अब भली प्रकार सिद्ध हो गई है, फिर भी लोग परंपरा के नाम पर उन्हें छोड़ने को तैयार नहीं होते और सब तरह के छलबल से भी उनको कायम रखने का दुराग्रह करते हैं।

फिर स्वामी दयानंद जी के समय में देश और समाज की दशा में सुधार करने का प्रयत्न कितना कठिन होगा ? इसका अनुमान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर सकना कठिन नहीं है। एक तो लोगों की मूढ़ता और कट्टरता उस समय बहुत बढ़ी-चढ़ी थी और दूसरे स्वामीजी बड़े स्पष्टवक्ता और सबके सामने खरी बात कहने वाले थे। परिणाम यह हुआ कि वे जहाँ जाते थे, वहाँ ही उनका विरोध होता था और अनेक लोग उनको हानि पहुँचाने को तैयार हो जाते थे। यद्यपि कुछ लोग उनके उपदेशों से प्रभावित होकर उनके सहयोगी भी बन जाते थे और उनकी सहायता करने को तत्पर होते थे, पर उनकी संख्या विरोधियों के मुकाबले में नगण्य होती थी। स्वामी जी के विशेष रूप से विरोधी तो वे पंडित, पुरोहित, पंडा, साधु नामधारी व्यक्ति होते थे, जिनकी इस प्रकार के उपदेशों के कारण स्वार्थहानि होती थी। वे लोग धर्म और परंपरा का नाम लेकर सहज में अशिक्षित और अज्ञान जनता को भड़का देते थे और लोगों को स्वामी जी को हानि पहुँचाने के लिए उकसाते थे।

ऐसी दशा में स्वामी जी का वास्तविक सहायक उनका विद्या-बल और शारीरिक बल ही होता था। दुष्ट लोग बड़े-बड़े उद्दंड अथवा लड़ाका लोगों को बहकाकर स्वामी जी के मुकाबले में भेजते थे, पर वे या तो अपने बुद्धिमत्तापूर्ण तर्कों से अथवा अपरिमित शारीरिक बल से उनको ठंडा कर देते थे। कहते हैं कि कानपुर में स्वामी जी के स्थान के निकट ही रहने वाला एक गंगा-पुत्र 'पंडा' उनको नित्यप्रति सवेरे कितनी ही गालियाँ सुना दिया करता था, पर वे अपनी क्षमाशीलता के कारण उससे कुछ नहीं कहते थे। इतना ही नहीं कुछ दिन पश्चात् अपने पास भेंट आने वाले मेवा-मिष्ठान्न में से बहुत-से पदार्थ उसको देने भी लगे। पाँच-सात दिन में ही उस को इतनी आत्मग्लानि हुई कि वह नेत्रों में आँसू भरकर स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा—"भगवन् ! आपकी सुजनता ने मेरी दुर्जनता को जीत लिया।"

फर्रुखाबाद में कुछ लोगों ने एक बड़े जबर्दस्त गुंडे को बहकाकर स्वामी जी को हानि पहुँचाने भेजा। उसने आते ही पूछा—"क्या आप मूर्ति को ईश्वर नहीं मानते ?" स्वामी जी ने पूछा—"आपको ईश्वर के मुख्य लक्षणों का पता है ?" उसने कहा—"हाँ, ईश्वर सच्चिदानंद, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान्, भक्त-वत्सल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता है।" इस पर स्वामी जी ने कहा—आपका कथन बिल्कुल ठीक है। वास्तव में ईश्वर के ये ही गुण हैं। पर क्या आपको मूर्तियों में ये गुण दिखाई देते हैं ?" वह व्यक्ति कुछ देर विचार करता रहा और फिर स्वामी जी के सम्मुख नतमस्तक होकर चला गया।

पर जहाँ सीधी तरह बातों से काम नहीं चलता था, वहाँ वे शक्ति प्रदर्शन से भी पीछे नहीं हटते थे। कर्णवास में एक बड़े जमींदार राव कर्णसिंह ने जब स्वामी जी की मूर्तियों और गंगा आदि की आलोचना करते सुना तो वह दस-बारह हथियार बंद लोगों को लेकर स्वामी जी के स्थान पर चला आया। उसने आते ही पूछा—"आप हमारे यहाँ रास में क्यों नहीं आए ? संन्यासी होकर ऐसा करना अत्यंत बुरा है। जब हमारे यहाँ लीला होती है तो सभी पंडित, संन्यासी उसमें सम्मिलित होते हैं।"

स्वामी जी ने कहा—जब आपके सम्मुख आपके पूज्य महापुरुषों का रूप बनाकर नीच श्रेणी के व्यक्ति आते हैं और नाचते, गाते हैं और आप बैठे-बैठे देखा करते हैं, तब क्या इससे आपको लज्जा प्रतीत नहीं होती ?"

स्वामी जी ने फिर पूछा कि—"आपके मस्तक पर यह रेखा-सी क्या है ?" राव साहब ने कहा—यह श्री का चिन्ह है, जो इसे धारण नहीं करता वह चांडाल होता है।" जब उनसे पूछा गया कि—क्या आपके पिता भी इसे धारण करते थे तो उन्होंने इतरा करके कहा कि—"मैंने ही कुछ वर्ष पूर्व वैष्णव संप्रदाय की दीक्षा ली है—इसलिए मैं इसे लगाता हूँ। हमारे पिताजी वैष्णव नहीं हुए थे, इसलिए वे इसे धारण नहीं करते थे।"

स्वामी जी ने कहा कि—"यदि आपकी बात ठीक है तो आपके ही कथनानुसार आपके पिता और दीक्षा ग्रहण करने से पूर्व आप भी चांडाल सिद्ध हो गए।"

राव साहब इतना सुनते ही क्रोध के मारे जल उठे और जोर से कहने लगे—"मुँह सँभालकर बोलो।" पर जब स्वामी जी पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा तो वे तलवार निकालकर उन पर लपके। पहले तो स्वामी जी ने उनको हाथ से ही रोका, जिससे वे गिर गये, पर दुबारा उठकर फिर जब वे झपटे तो स्वामी जी ने खडे होकर,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी तलवार छीनकर दो टुकड़े कर दी। उन्होंने राव का हाथ पकड़कर कहा—"क्या तुम यह चाहते हो कि मैं भी आततायी पर प्रहार करके बदला लूँ ? पर नहीं, मैं संन्यासी हूँ। तुम्हारे किसी अत्याचार से चिढ़कर तुम्हारा अनिष्ट-चिंतन नहीं करूँगा। जाओ, ईश्वर तुम्हें सुमति प्रदान करे।"

इसके कुछ समय बाद भी इन्हीं कर्ण सिंह ने दो-तीन व्यक्तियों को रात के समय स्वामी जी को मारने के लिए भेजा। पर उनको देखकर उन्होंने इतने जोर से 'हुंकार' लगाई कि वे जमीन पर गिर पड़े और बाद में बड़ी कठिनता से उठकर अपने स्थान तक जा सके।

स्वामी जी को इस प्रकार के उपद्रवियों का सामना अनेक बार करना पड़ा, पर वे इतने निर्भय थे और उनकी शारीरिक शक्ति भी इतनी अधिक थी कि कभी कोई उनको पराभूत न कर सका। काशी में जब वे एक गली में होकर जा रहे थे तो एक मरखना विशाल साँड़ सामने से आ गया। उसे देखकर सब लोग दौड़-दौड़ कर अगल-बगल के चबूतरों पर चढ़ गये। पर स्वामी जी बराबर अपनी चाल से चलते हुए साँड़ के सामने जा पहुँचे। वह पशु भी उनकी निर्भयता के प्रभाव से दूसरी तरफ चला गया।

पर फिर भी स्वामी जी को अपनी शक्ति का अभिमान न था और न उन्होंने कभी उसका दुरुपयोग किया। उन पर बीसियों बार आक्रमण किए गये, ईंट, पत्थर फेंके गए, एक बार किसी मूर्ख ने जूता भी फेंका, किसी पापी ने जीवित विषधर सर्प उन पर डाल दिया, पर वे सदा सबको क्षमा ही करते रहे। वे जानते थे कि, यदि मुझे लोगों के विचार बदलने हैं, उनको गलत राह से हटाकर सुमार्ग पर चलाना है तो क्रोध, संघर्ष, लड़ाई-झगड़ा से काम नहीं चलेगा। जब हम लोगों को एक नये मार्ग की शिक्षा देना चाहते हैं और उनके पुराने चिरपरचित मार्ग से उनको हटाना चाहते हैं तो उनका किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाना और उस अवस्था में कुछ अनुचित कृत्य भी कर बैठना असंभव नहीं। फिर स्वामी जी के प्रचार कार्य से तो लाखों धर्मजीवी (पंडा, पुरोहित, पंडित, ब्राह्मण आदि) के स्वार्थों को भी धक्का लगता था, उनकी जीविका के साधन पर आघात होता था, वे प्राणपण से उनका विरोध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्यों न करते ? स्वामी जी इस तथ्य को समझते थे और इसलिए अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहते हुए भी, अपनी शक्ति का प्रयोग कभी बहुत आवश्यकता पड़ने पर ही करते थे।

सौभाग्यवश उनको गुरु भी ऐसे मिले थे, जिन्होंने अत्यंत कठोर अनुशासन में रखकर और कठिनाइयों के साथ संघर्ष कराके इनको धर्म-सुधारक की पदवी के योग्य बना दिया था। यद्यपि गुरु विरजानंदजी के व्यवहार की जो घटनाएँ जीवन-चरित्र में पढ़ने में आती हैं, उनमें पाठकों को प्रेम और सहानुभूति की न्यूनता का ही आभास होता है। पर उनके परिणामस्वरूप स्वामी जी को सब प्रकार के व्यवहार को सहन करने और हर तरह की परिस्थितियों में रहने की शक्ति आ गई। प्रत्येक समाजसेवी में इस प्रकार शक्ति का होना परमावश्यक है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वामी जी की प्रत्युत्पन्न मति—

यद्यपि स्वामी जी के सबसे बड़े अस्त्र शास्त्रार्थ और हानिकारक रूढ़ियों का खंडन करने वाले उपदेश ही थे, पर वे जहाँ तक संभव होता अनेक बार वाद-विवाद और संघर्ष की परिस्थिति को विनोदात्मक बातों के द्वारा ही सुलझा लेते थे। जैसा हम पिछले उदाहरणों में बतला चुके हैं, उस समय देश में टकापंथी 'साधु' 'ब्राह्मणों' की बहुतायत थी और ये प्रायः अहंकारवश और अपने स्वार्थ की दृष्टि से स्वामी जी से लड़ने का अवसर ढूँढ़ा करते थे जिससे जनता को उनके विरुद्ध भड़काने का मौका मिल सके। पर स्वामी जी इसका मौका बहुत कम देते थे, और जैसा व्यक्ति देखते थे, उसे उसी प्रकार के उत्तर से निरुत्तर करके सुधार करने का उपदेश देते थे।

अलीगढ़ में एक पंडित स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने आये और मंदिर के ऊँचे चबूतरे पर बैठकर बोलने लगे। कई लोगों को यह अनुचित जान पड़ा और उसे समझाने लगे कि—बराबर में आसन पर बैठ कर बातचीत करो। पर उसने अपने हठ के आगे किसी की न सुनी। तब स्वामी जी बोले—कोई हर्ज नहीं, पंडित जी वहीं बैठे रहें। केवल ऊँचे आसन से किसी को महत्त्व प्राप्त नहीं होता। यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊँचा आसन बड़ाई का प्रमाण हो तो पंडित जी से भी ऊँचा वृक्ष पर वह कौआ बैठा है।"

अमृतसर में एक पादरी ने कहा—"आइए, एक दिन हम और आप मिलकर एक ही मेज पर भोजन करें। इकट्ठा होकर खाने से पारस्परिक प्रीति बढ़ती है।"

स्वामी जी ने उत्तर दिया—"शिया और सुन्नी मुसलमान एक ही बर्तन में खाते हैं। रूसी और अंग्रेज तथा रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट ईसाई भी एक मेज पर भोजन करते रहते हैं, परंतु हम जानते हैं कि इनमें कितना अधिक वैर-विरोध और शत्रुता के भाव रहते हैं।"

एक संन्यासी स्वामी जी के प्रचार-कार्य से क्रोधित होकर उल्टी-सीधी बातें करते हुए आए और कहने लगे—"तुम संन्यासी नहीं, धूर्त हो—ठग हो ! भला संन्यासी को धातु छूना कहाँ लिखा है ? तुम अपने पास रुपया-पैसा रखते हो, थाली में भोजन करते हो। इस तरह दूसरों को धोखा देते फिरते हो, शर्म नहीं आती ?" स्वामी जी उनकी बातों पर मुसकराते हुये कहने लगे—"हाँ, स्वामिन् आप ठीक कहते हैं। मैं धातु छूता हुआ कभी-कभी पैसा रख लेता हूँ। आप तो सच्चे संन्यासी हैं ! आप तो धातु का स्पर्श करते न होंगे। आपने अपने मस्तक का मुंडन भी शायद उस्तरे से न कराया होगा, क्योंकि वह धातु का ही होता है ! स्वामी जी महाराज ! फिर किस चीज से—क्या चमड़े से आपके बाल मूड़े गए हैं।"

लुधियाना (पंजाब) में भूत-प्रेत की चर्चा चलने पर आपने लोगों के भ्रम-निवारणार्थ एक खेल दिखाया। उनके बैठने के कमरे में दस-बारह गज की दूरी पर दो ताक़ बने थे। एक दिन उन्होंने उन दोनों में दो दीपक जलाकर रख दिए। पहले उनमें से एक दीपक बुझा दिया गया। पर जब दूसरा दीपक बुझाया गया तो पहला अपने आप जल उठा। लोगों ने अनेक बार एक-एक दीपक को बुझाकर परीक्षा ली पर बारंबार दूसरा दीपक अपने आप जलता रहा। इससे लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे इसे एक करामात समझने लगे। पर स्वामी जी ने बतलाया कि, यह किसी तरकीब से किया गया एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खेल ही है। इसी प्रकार भूत-प्रेत की घटनाएँ किसी कारणवश दिखाई पड़ती हैं, जिनको लोग समझ नहीं पाते।

प्रलोभनों को ठुकराया—

धर्म-सुधार का कार्य करते हुए स्वामी जी के सम्मुख प्रलोभन भी कम नहीं आए, पर वे कभी अपने सिद्धांतों से टस से मस नहीं हुए। एक दिन एकांत में उदयपुर के महाराणा उनसे मिले तो कहने लगे—"भगवान् ! आप मूर्तिपूजा का खंडन छोड़ दें। यह राजनीति के सर्व संग्रह' सिद्धांत के प्रतिकूल है। यदि आप इस बात को मान लें, तो उदयपुर के एकलिंग महादेव के मंदिर की गद्दी आपकी ही है। वैसे हमारा समस्त राज्य ही उस मंदिर में समर्पित है, पर मंदिर में राज्य का जितना भाग लगा हुआ है, उसकी भी लाखों रुपये की आय है। इतना भारी ऐश्वर्य आपका हो जाएगा और समस्त राज्य के आप गुरु माने जाएँगे।"

यह सुनते ही स्वामी जी का आत्मभाव जाग्रत् हो गया और वे किंचित् रोषपूर्वक बोले—"महाराज, आप मुझे तुच्छ प्रलोभन दिखाकर परमात्म-देव से विमुख करना चाहते हैं। उसकी आज्ञा भंग कराना चाहते हैं ? राणाजी ! आपके जिस छोटे से राज्य और मंदिर से मैं एक दौड़ लगाकर बाहर जा सकता हूँ, वह मुझे अनंत ईश्वर की आज्ञा भंग करने के लिए विवश नहीं कर सकता। परमात्मा के परम प्रेम के सामने इस मरुभूमि की मायाविनी मरीचिका अति तुच्छ है। फिर मुझ से ऐसे शब्द मत कहियेगा। मेरी धर्म की ध्रुव धारणा को धराधाम और आकाश की कोई वस्तु डगमगा नहीं सकती।"

महापुरुषों के सम्मुख ऐसे प्रलोभन प्रायः आया करते हैं, पर सच्चे आत्म-ज्ञानी सदा उनकी उपेक्षा किया करते हैं। रामकृष्ण परमहंस को जब एक मारवाड़ी सेठ ने जीर्ण वस्त्र व्यवहार करते देखा तो वह उनकी दस हजार रुपया देने लगा, जिससे उनका निर्वाह सुखपूर्वक होता रहे। पर परमहंस देव ने उसे स्पष्ट रूप से ऐसी चर्चा करने से भी रोक दिया। इसी प्रकार दक्षिणेश्वर मंदिर के व्यवस्थापक मथुरा बाबू—जिनके यहाँ परमहंस देव निवास करते थे, उनके नाम ५० हजार रुपया जमा कराने को कहने लगे, जिसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्याज से वे अपना कार्य भली प्रकार चला सकें, पर इसको भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

स्वामी दयानंद जी को इस प्रकार के प्रलोभन जीवन में अनेक बार दिये गए। काशी नरेश ने उनसे भारत प्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर का अध्यक्ष बनने का प्रस्ताव किया था। गुजरात में एक वकील ने उनसे कहा कि, आप मूर्ति-पूजा का विरोध करना छोड़ दें तो हम आपको शंकर जी का अवतार मानने लगें। और भी अनेक स्थानों में उनसे वैभवशाली मंदिरों और मठों का अध्यक्ष बनकर रहने का आग्रह किया गया। पर उन्होंने सदैव यही उत्तर दिया कि, मेरा कार्य देश और जाति की सेवा करके सुधार करना है, न कि धन-संपत्ति इकट्ठी करके सांसारिक भोगों में लिप्त होना। मैं परमात्मा के दिखाये श्रेष्ठ मार्ग से कभी पश्चात्पद नहीं हो सकता। वास्तव में यही प्रत्येक आत्म-कल्याण के इच्छुक व्यक्ति का कर्तव्य है।

गौ रक्षा के लिए उद्योग—

गौ रक्षा की समस्या जिस प्रकार आज जटिल बनी है, वैसी ही लगभग स्वामी जी के समय में थी। वे गौ को मनुष्य जाति के लिए परम हितकारी मानते थे और इसलिए उसकी रक्षा के लिए सदैव प्रेरणा देते रहते थे। वे यह भी समझते थे कि जिस प्रकार अनेक पुराने विचारों के लोग थोड़ी-सी बुड्ढी, अपंग और जराजीर्ण गायों को गौशाला में रखकर गौ-रक्षा का नाम कर लेते हैं, वह रास्ता बिल्कुल गलत है। वास्तविक गौ रक्षा तो यह है कि अधिकाधिक दूध देने वाली गौओं और खेती का कार्य उत्तम रीति से कर सकने योग्य बैलों की संख्या में यथाशक्ति वृद्धि की जाए, क्योंकि भारतवासियों के जीवन निर्वाह का आधार मुख्यतः अन्न और दूध, ये दो ही पदार्थ हैं। इस विषय का सविस्तार विवेचन स्वामी जी ने "गो करुणानिधि" नामक पुस्तक में किया था और इस संबंध में एक विज्ञापन छपवाकर उस पर सहस्त्रों हस्ताक्षर कराकर महारानी विक्टोरिया की सेवा में भेजा था। उसका कुछ अंश इस प्रकार था—

विश्व भर में जीवन के मूल दो ही पदार्थ हैं—एक अन्न और दूसरा पान। मनुष्यों को खान-पान भरपूर प्राप्त हो, इस अभिप्राय से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्यावर्त के शिरोमणि राजा-महाराजा और प्रजा के लोग महोपकारक गाय आदि पशुओं का न तो आप वध करते थे और न किसी दूसरे को करने देते थे। इनकी रक्षा से अन्न-पान की बहुत वृद्धि होती है, जिससे सर्व साधारण का सुखपूर्वक निर्वाह हो सकता है। राजा-प्रजा की जितनी हानि इसकी हत्या से होती है, उतनी किसी भी दूसरे कर्म से नहीं होती हैं। एक गाय के वध से चार लाख और एक भैंस के वध से बीस सहस्र मनुष्यों की हानि होती है—इसका निर्णय हमने 'गो-करुणानिधि' नामक पुस्तक में अति विस्तार से किया है। इसलिए हम सब मिलकर प्रजा हितैषिणी श्रीमती राजेश्वरी महारानी विक्टोरिया की सेवा में प्रार्थना करें और उनको न्याय पद्धति में, जो गौ-हत्या रूप अन्याय हो रहा है, उसे बंद कराकर प्रसन्नता का लाभ प्राप्त करें।

"देखिए तो सही, अनेक गुणयुक्त गाय आदि पशुओं के वध के दूध घी कितने महँगे हो गये हैं। किसानों की कितनी बड़ी हानि हो रही हैं, जिसका फल राजा प्रजा सभी भोग रहे हैं। नित्य प्रति हानि की मात्रा बढ़ती ही चली जाती है। जब कोई मनुष्य पक्षपात को छोड़कर देखता है तो परोपकार को ही धर्म और पर-हानि को ही अधर्म जानता है। जिससे अधिकांश मनुष्यों का अधिक उपकार हो उसका नाश कभी नहीं करना चाहिए"

इस प्रकार स्वामी जी ने जन कल्याण की दृष्टि से एक आवश्यक विषय की ओर सर्व साधारण का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने गौ रक्षा का प्रश्न उसके 'गौ माता' होने अथवा उसकी सहायता से परलोक में वैतरणी' पार कर सकने की दृष्टि से नहीं उठाया, वरन् आर्थिक कारणों से उसका समर्थन किया। हमें खेद से कहना पड़ता है कि आज हिंदू धर्म के 'नेता' बनने वाले सज्जन गो-रक्षा आंदोलन के इस वास्तविक आधार को छोड़कर दलबंदी अथवा राजनीतिक सफलता की दृष्टि से गौ की हत्या और रक्षा का शोर मचा रहे हैं। हमको तो उनके इस प्रदर्शन से गौ जाति का अभी तक कोई भला होता दिखाई नहीं देता। जैसा स्वामी दयानंदजी ने गौ की आर्थिक उपयोगिता बतलाकर उसकी रक्षा और वृद्धि की तरफ जनता और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शासक-वर्ग का ध्यान आकर्षित किया था, यदि उस मार्ग पर चला जाता तो कुछ लोकहित अवश्य पूरा हो सकता था।

स्त्री-शिक्षा का प्रचार—

समाज की उन्नति का विचार करते हुए स्वामी जी का ध्यान स्त्रियों की स्थिति की ओर भी आकर्षित हुआ। उस समय तक स्त्री-शिक्षा का किसी को ध्यान ही न था और न लोग उसकी आवश्यकता अनुभव कर रहे थे। स्त्रियाँ पूर्णतः घर की चहारदीवारी में आबद्ध थीं, और उनके अज्ञान तथा पिछड़ेपन के कारण समाज की बड़ी हानि हो रही थी। स्वामी जी की तीक्ष्ण दृष्टि ने शीघ्र ही इस बात को देख लिया कि हिंदू-समाज के पतन का एक बड़ा कारण यह स्त्रियों का पिछड़ापन भी है। जब तक माताएँ सुयोग्य न होंगी तब तक उनकी संतान का उन्नतिशील और कर्तव्यपरायण हो सकना कठिन है। इस दृष्टि से स्वामी जी ने आरंभ से ही स्त्री-शिक्षा पर भी बल देना आरंभ किया था और आर्य-समाजों की स्थापना के साथ ही पुत्री-पाठशालाओं के खोलने का आदेश दिया गया था। इसका ही परिणाम था कि महात्मा मुंशीराम (बाद में स्वामी श्रद्धानंद) और लाला देवराज जैसे आर्य-पुरुषों ने सन् १८९० में जालंधर में कन्या पाठशाला की स्थापना कर दी, जो आज कन्या महाविद्यालय के रूप में भारत ही नहीं विदेशों तक में प्रसिद्ध है। इस संबंध में स्वामी दयानंद जी का जीवन वृतांत लिखते हुये स्वामी सत्यानंद ने लिखा है—

"स्वामी जी महाराज की यह हार्दिक कामना थी कि किसी प्रकार मातृशक्ति का सुधार हो। स्त्रियों में भी धर्म-प्रचार और शुभ शिक्षा फैले। वे अपनी कुशाग्र बुद्धि से इस सिद्धांत के मर्म को जानते थे कि संतानों में नव-जीवन की नींव रखने वाले हाथ माताओं के होते हैं। मीठी-मीठी लोरियों के साथ और हल्की-हल्की थपकियों से मातायें पुत्रों में वे भाव भर देती हैं, जो किसी भी दूसरे स्थान से प्राप्त नहीं हो सकते। जननियाँ मानवजाति के जीवन की वास्तविक जड़ है। संतति के उन्नति के उच्चतम शिखर पर ले जाने के लिए जगमगाती ज्योतियाँ हैं; परंतु उस समय उन्हें ऐसी कोई आर्य देवी नहीं दीखती थीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाराज का हृदय इसी ऊहापोह और विचार-परंपरा में परायण था कि एकाएक उनकी सेवा में श्री रमा के पत्र आने लगे। वे पत्र पूज्य भाव से, आदर बुद्धि और भक्ति-विनय से परिपूर्ण थे।"

यह रमाबाई महाराष्ट्र के कौंकण प्रदेश की रहने वाली थीं और उन्होंने अपने पिता से बाल्यावस्था में ही संस्कृत का अच्छा अध्ययन कर लिया था। बाद में अनाथ हो जाने के कारण वे अत्यंत कष्ट सहन करती हुई कलकत्ता पहुँच गईं और अपनी योग्यता से वहाँ के शिक्षित समाज में पर्याप्त आदर सम्मान की अधिकारिणी बन गई थीं। वे स्वामी जी के पास आकर उनसे एक मास तक शिक्षा ग्रहण करती रही। उस समय पंडित भीमसेन जी, ज्वालादत्त जी, ज्योतिस्वरूपजी भी विद्यार्थी के रूप में स्वामी जी से पढ़ते रहते थे। जब श्रीमती रमा अपने घर जाने लगीं तो स्वामी जी ने उनको उपदेश देते हुए कहा—"इस समय आर्य जाति की पुत्रियों की अवस्था अति शोचनीय है। वे संसार भर के भ्रमों और कुरीतियों का केंद्र बनी हुई हैं। आप आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर उनका सुधार कीजिए। उनको दीन-दशा से उबारिये। इस शुभ-कार्य में आर्य समाज की पद्धति पर चलते हुए आपको धन की पर्याप्त सहायता प्राप्त होती रहेगी।"

रमाबाई ने स्त्री शिक्षा और दुरावस्था में पड़ी स्त्रियों के उद्धार का प्रशंसनीय कार्य किया। पर आर्य समाज के अंतर्गत काम करने के बजाय किन्हीं परिस्थितियों के कारण उनको ईसाइयों से सहयोग लेना पड़ा। उन्होंने कई बार इंगलैंण्ड, अमेरिका की यात्रा की और वहाँ से अनुभव तथा साधन प्राप्त करके भारत में नारी शिक्षा संस्थाओं का अच्छा प्रचार किया। पर ईसाइयों का संपर्क होने के कारण उनको हिंदुओं का सहयोग मिलना बहुत कम हो गया, जिससे उनके कार्य का उचित विस्तार न हो सका।

हिंन्दी ही राष्ट्रभाषा है—

देशोन्नति की दृष्टि से स्वामी जी ने जो अनेक प्रयत्न किए, उनमें से एक हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान देना भी था। मुसलमानी शासन काल में शासन कार्य और अदालतों की भाषा फारसी हो गई थी, जो बाद में उर्दू के रूप में बदल गई। अंग्रेजी शासन में ऊँचे दर्जे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का काम तो अँग्रेजी में होने लगा, पर अदालतों का तथा अन्य साधारण कचहरियों का उर्दू में ही जारी रहा। खास कर पंजाब में, जहाँ स्वामी जी का प्रचार कार्य सबसे अधिक फैला, उर्दू सर्वसाधारण की भाषा बन गई थी। केवल कुछ स्त्रियाँ धार्मिक ग्रंथ पढ़ने के ख्याल से हिंदी सीख लेती थीं, पर शिक्षा संस्थाओं तथा पुस्तकों और अखबारों में उर्दू का ही प्रचार था। स्वामी जी ने देखा कि यह बात भारतीय धर्म और संस्कृति की दृष्टि से बहुत हानिकारक है। इसलिए उन्होंने सन् १८७४ में ही जब बंबई आर्य समाज के लिए नियम बनाए, तो उसके पाँचवे नियम में यह बात लिख दी कि "प्रधान समाज में सत्योपदेश के लिए संस्कृत और आर्यभाषा में नाना प्रकार के ग्रंथ रहेंगे।" इसमें 'आर्य-भाषा' से उनका तात्पर्य हिंदी से ही था। लाहौर में अपने अनुयायियों का संगठन करते समय भी उन्होंने प्रत्येक आर्य-समाजी के लिए 'आर्य भाषा' सीखना अनिवार्य कर दिया था। वे हिंदी-प्रचार के लिए कितने दृढ़ थे, यह उनके जीवन-चरित्र में वर्णित निम्न घटना से विदित होता है—

"हरिद्वार में एक दिन स्वामी जी महाराज अपने आसन पर बैठे सत्संगियों को समझा रहे थे। बीच में एक सज्जन ने निवेदन किया—"यदि आप अपनी पुस्तकों का अनुवाद कराकर फारसी अक्षरों में छपवा दें तो पंजाबादि प्रांतों में जो लोग नागरी अक्षर नहीं जानते, उनको आर्य-धर्म के जानने में बड़ी सुविधा हो जाएगी।"

"महाराज ने उत्तर दिया—"अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। नागरी के अक्षर थोड़े ही दिनों में सीखे जा सकते हैं। आर्यभाषा को सीखना भी कोई कठिन काम है ? फारसी और अरबी शब्दों को छोड़ कर ब्रह्मावर्त की सभ्य भाषा ही 'आर्य-भाषा' है। यह अति कोमल और सुगम है। जो इस देश में उत्पन्न होकर अपनी भाषा के सीखने में कुछ भी परिश्रम नहीं करता, उससे और क्या आशा की जा सकती है ? उसमें धर्म की लगन है, इसका भी क्या प्रमाण है ? आप तो अनुवाद की सम्मति देते हैं, परंतु दयानंद के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्यावर्त भर में भाषा का ऐक्य संपादन करने के लिए ही अपने समस्त ग्रंथ आर्य भाषा में ही लिखे और प्रकाशित किए हैं।"

वास्तव में भाषा का प्रश्न एक बड़ी गंभीर समस्या की तरह था। किसी जाति के धर्म और संस्कृति का भाषा से भी बड़ा संबंध होता है। यदि उर्दू को प्रधानता देकर उसकी ही अधिक जानकारी हासिल करें तो हमारे विचारों में भी विदेशीपन की भावना बढ़ जायेगी। जैसा किसी विद्वान् ने कहा था—"अगर हम संस्कृत और हिंदी ग्रंथों का अध्ययन करेंगे तो हम दान के लिए कर्ण, सत्य बोलने के लिए हरिश्चंद्र, वीरता के लिए भीम और अर्जुन जैसे भारतीय महापुरुषों का उदाहरण देंगे। पर यदि हम हिंदी से अनजान रहकर उर्दू फारसी के जानकार बनेंगे, तो हमको दानियों में हातिम, वीरों में रुस्तम, कवियों में हसन और पुस्तकों में गुलिस्ताँ आदि की ही याद आएगी।" यह बात निश्चय ही राष्ट्रीयता की दृष्टि से घातक है। स्वामी जी इस तथ्य को भली प्रकार समझते थे, इसलिए उन्होंने आरंभ से ही अपने संगठन में हिंदी को प्रधान स्थान दिया और अपनी समस्त पुस्तकें उसी में लिखीं। यदि वे चाहते तो उन पुस्तकों को संस्कृत या अपनी मातृभाषा गुजराती में भी लिख सकते थे, पर वे राष्ट्रभाषा के महत्त्व और आवश्यकता को भली-भांति समझते थे, इसलिए उन्होंने आरंभ से ही उसकी प्रधानता की घोषणा कर दी। इससे देश भर के आर्य समाजों के सभी सदस्य किसी न किसी रूप में थोड़ी-बहुत हिंदी सीख लेते हैं, और देशभर में समाजों की कार्यवाही हिंदी में ही होती है। यद्यपि अब हिंदी की उस समय की अपेक्षा प्रत्येक क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति हो चुकी है, फिर भी उसके मार्ग में कुछ बाधाएँ अब भी मौजूद हैं। इस कार्य के लिए स्वामी जी सभी हिंदीभाषियों के श्रद्धा के पात्र हैं।

स्त्रियों को धार्मिक और सामाजिक अधिकार—

स्त्री-शिक्षा के प्रचार के साथ स्वामी जी स्त्रियों को सभी प्रकार के धार्मिक और सामाजिक अधिकार दिए जाने के भी समर्थक थे, उन्होंने कई स्त्रियों को स्वयं गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी और उनको नियमपूर्वक गायत्री जप करने का आदेश दिया था। ऐसी ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक महिला कर्णवास की हंसा ठकुरानी थी। वह बाल विधवा थी, पर उसने बड़े संयमपूर्वक ६० वर्ष की आयु प्राप्त कर ली थी। वह पाँच-छहः गाँवों की स्वामिनी थी, पर केवल जौ की रोटी और मूँग की दाल खाती थी और वह भी सदैव अपने हाथ से बनाकर। सभी ठाकुर परिवारों में उसका बड़ा आदर था। उस वृद्धा ने स्वामी जी के दर्शनों की अधिक अभिलाषा प्रकट की और स्वामी जी ने उसे आने की आज्ञा दे दी। उसने आकर बड़ी श्रद्धा से भूमि पर माथा टेक कर नमस्कार किया और आत्म-कल्याण का मार्ग पूछा। स्वामी जी ने उसे अन्य देवी-देवताओं की उपासना के बजाय गायत्री साधना करने की सम्मति दी। साथ ही 'ॐकार' का पवित्र जप करने की भी शिक्षा दी। हंसा देवी जब तक जीवित रही—निरंतर स्वामी जी के उपदेश के अनुसार आचरण करती रही।

इसी तरह बंबई की तरफ उन्होंने भगवती नाम की एक प्रसिद्ध तपस्विनी और योग साधन करने वाली महिला को भी गायत्री का उपदेश दिया था। पुराने ढंग के पंडित इन बातों पर भी हाय-तोबा मचाते थे कि शास्त्रों में स्त्रियों तथा शूद्रों को वेद-मंत्र सुनने का अधिकार नहीं है। बंबई प्रांत की एक सभा में कुछ दक्षिणी पंडित वाद-विवाद के विचार से आये। पर जैसे ही स्वामी जी ने अपने भाषण में एक वेद मंत्र का उच्चारण किया, वे लोग उठकर चलने लगे। पूछने पर उन्होंने कहा कि—"इस सभा में कई मुसलमान हैं शूद्र हैं तथा स्त्रियाँ भी हैं। इन सबके कानों में वेद मंत्र का पढ़ना शास्त्र के विरुद्ध और पाप कर्म है, इसीलिए हम यहाँ नहीं ठहर सकते।"

पर स्वामी जी ने कभी ऐसे कट्टरता में लिप्त व्यक्तियों की परवाह न की। उनका कथन था कि इस प्रकार के अधिकारच्युत और पतित अवस्था में पड़े लोगों के लिए ही तो धर्मोपदेश किया जाता है। सामर्थ्यवान् और साधन-संपन्न मनुष्य तो अपनी व्यवस्था स्वयं ही कर लेते हैं। इस प्रकार यद्यपि स्वामीजी ने अपने व्यवहार से स्त्री और शूद्रों को समान अधिकार देने की घोषणा कर दी, पर कार्य रूप में अभी तक इन सिद्धांतों पर बहुत कम अमल किया जाता है। महात्मा गाँधी के प्रयत्नों और त्याग-तपस्या से शूद्रों को कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजनीतिक और थोड़े से सामाजिक अधिकार अवश्य मिल गये हैं, पर धार्मिक और जातीय विषयों में अभी तक धार्मिक संस्थानों ने अपना दृष्टिकोण एवं व्यवहार पूर्ववत् ही बनाए रखा है। जान पड़ता है—यह क्रांति के बिना पूरा न होगा।

यह ईंट-पत्थर नहीं—फूलों की वर्षा है—

अमृतसर में जब स्वामी जी ने पंडितों को शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया तो वे बहुत अधिक संख्या में 'जय-जय' का नाद करते हुए उनकी सभा में आये। वे सब तिलक लगाए, पुस्तकें बगल में दाबे स्वामी जी के सामने बड़ी अकड़ के साथ बैठे थे। उन्होंने शास्त्रार्थ या विचार-विनिमय तो कुछ नहीं किया। एकाएक उनके चेलों ने स्वामी जी पर ईंट-पत्थर फेंकना आरंभ कर दिया। इससे स्वामी जी के भक्तों में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ और उसी समय उन उद्दंडों को दंड देने को उद्यत हो गये। पर स्वामी जी ने लड़ाई-झगड़े को रोका और कहा—"मत (संप्रदाय) रूपी मदिरा से उन्मत्तजनों पर कोप नहीं करना चाहिए। हमारा काम एक वैद्य जैसा है उन्मत्त मनुष्य को वैद्य औषधि देता है, न कि उसके पागलपन के कारण मारपीट करता है। निश्चय जानिए, आज जो लोग मुझ पर ईंट, पत्थर और धूल बरसाते हैं वे ही एक दिन फूलों की वर्षा करने लगेंगे।"

पूना में भी जब वहाँ के आर्य समाजियों ने स्वामी जी को बुलाकर मूर्ति-पूजा, श्राद्ध आदि के संबंध में भाषण कराये तो उस नगर के सनातनी बहुत चिढ़ गये। भाषणों का अंत हो जाने पर स्वामी जी के अनुयायियों ने एक बड़ा जुलूस निकालकर उनको विदा करने का निश्चय किया। पर जब विरोधियों को इसकी खबर लगी तो उन्होंने भी 'गर्दभानंदाचार्य' की सवारी निकालने की घोषणा कर दी और स्वामी जी के जुलूस में विघ्न डालने का भी निश्चय किया। आर्य-समाज वालों को जब इसका पता लगा तो वे घबराये, क्योंकि उनकी संख्या बहुत कम थी और विरोधी तो शहर में भरे पड़े थे। यह देखकर उन्होंने माननीय महादेव गोविंद रानाडे से सहायता की प्रार्थना की। यद्यपि रानाडे महोदय 'प्रार्थना समाज' के सदस्य थे और इन दोनों संस्थाओं के उद्देश्यों में बहुत अंतर भी था। पर एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुधारक की हैसियत से वे इस कार्य में सहायता देने को तैयार हो गए। वे एक बहुत बड़े सरकारी पद पर थे, अतः उनके कहने से पुलिस का एक बड़ा दल जुलूस की देख भाल करने को आ गया और वे स्वयं भी साथ में चले। जुलूस बड़ी धूमधाम से निकाला गया। सबसे आगे पालकी में "वेद भगवान्" विराजमान किए गये और उसके पीछे एक हाथी पर स्वामी जी को बैठाया गया।

आरंभ में तो विरोधियों ने हल्ला-गुल्ला करके और गालियाँ बककर जुलूस को भंग कर देना चाहा, पर जब इससे काम न चला तो वे रास्ते में से कीचड़ और ईंट पत्थर उठाकर फेंकने लगे। जब भीड़ वालों को अधिक उग्र होते देखा तो रानाडे ने उन्हें शांतिपूर्वक भगा देने की आज्ञा दे दी। जैसे ही पुलिस वाले उनकी तरफ बढ़े, वे सब भाग खड़े हुये।

सूरत में जब स्वामी जी का भाषण हो रहा था तो इच्छाशंकर नामक पंडित बीच में ही खड़ा होकर मूर्तिपूजा के प्रमाण बोलने लगा। पर स्वामी जी की दो-चार बातें सुनकर ही यह निरुत्तर हो गया। तब उसके अनुयायी धूल उड़ाने और ईंट-पत्थर फेंकने लगे। स्वामी जी के सहायकों ने व्याख्यान बंद कर देने की प्रार्थना की। उन्होंने हँसते हुए कहा—"अपने भाइयों के फेंके हुए ये ईंट-पत्थर मेरे लिए पुष्प-वर्षा है। व्याख्यान तो समय पर ही बंद करूँगा।" उनकी दृढ़ता को देखकर दर्शक बहुत प्रभावित हुए और विरोधी पस्त हो गये।

इसमें संदेह नहीं कि महत्त्वपूर्ण कार्यों में प्रायः विघ्न-बाधाएँ आया ही करती हैं। खासकर समाज-सुधार और कुरीति निवारण का कार्य ऐसा है, जिसमें कुछ लोगों का सहमत और कुछ का असहमत होना अनिवार्य है। इसलिए सच्चे सुधारक को हर तरह का विरोध, कठिनाइयाँ और मानापमान सहने को प्रस्तुत होना ही पड़ता है। इसके बिना कोई इस मार्ग में न तो अग्रसर हो सकता है और न कुछ सफलता प्राप्त करके दिखा सकता है। स्वामी दयानंदजी ने इस विषय में पराकाष्ठा का साहस और दृढ़ता प्रकट करके दिखला दी। उन पर केवल ईंट-पत्थर ही नहीं फेंके गए, बीसियों लोग शस्त्र लेकर मारने आये और अनेक बार विष देने की चेष्टा की गई। बहुत कुछ सावधान रहने पर भी वे कई बार विश्वासघातियों द्वारा प्रदत्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विष खा भी गये योगाभ्यास द्वारा मृत्यु से बच गये। इस संबंध में एक दिन उन्होंने अपने एक प्रेमी से कहा—"मेरे ऊपर अनेक बार विष आदि घातक पदार्थों का प्रयोग किया गया है। यद्यपि मैंने उनको योगक्रियाओं से बाहर निकाल दिया, पर तो भी शरीर में उसका दूषित प्रभाव कुछ शेष रह ही जाता है। यही कारण है कि अब मुझे अपने शरीर के अधिक ठहरने का भरोसा नहीं है, अन्यथा मैं एक शताब्दी तक तो पूर्ण स्वस्थ अवस्था में जीवित रह ही सकता था।"

पर परोपकारी और परमार्थ-पथ के पथिकों के लिए कम या अधिक दिन तक जीने का कोई महत्त्व नहीं होता। नीति शास्त्र में कहा गया है कि—"कौआ उच्छिष्ट खाता हुआ सौ वर्ष तक जीवित रह जाता है और सिंह अद्‌भुत पराक्रम प्रदर्शित करके शीघ्र ही अपनी जीवन की लीला समाप्त कर देता है, पर क्या इससे कौआ का जीवन श्रेष्ठ समझा जा सकता है ? जिंदगी तो वही सराहनीय है, जो लोक-कल्याण के लिए काम में आती रहे, फिर चाहे उस पर ईंट-पत्थर फेंके जाएँ और चाहे फूलों की वर्षा की जाय।

विधर्मियों से वाद-विवाद और मांस भक्षण त्याग कराना

यद्यपि स्वामी जी का मुख्य कार्य क्षेत्र हिंदू समाज ही था, पर वे अपने सिद्धांतों को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने की दृष्टि से कभी-कभी ईसाई और मुसलमान मतों की आलोचना भी किया करते थे। बरेली में व्याख्यान देते हुए उन्होंने वहाँ के अंग्रेज कमिश्नर और कलेक्टर के सामने कहा कि—"पुराणों में यदि कुंती, तारा आदि "पंच कन्याओं" पर लांछन लगाया गया है तो ईसाइयों की बाइबिल में भी कुमारी मरियम के पुत्र होने की बात लिखी है और ईसाई उसका दोष सर्व शुद्ध स्वरूप परमेश्वर पर लगाते हैं। क्या यह लज्जा की बात नहीं है ?" उस समय तो कमिश्नर साहब चुपचाप चले गए, पर दूसरे दिन उन्होंने लाला लक्ष्मी नारायण को, जिनके बगीचे में स्वामी जी ठहरे हुये थे, बुलाकर कहा—"आप स्वामी जी से कह दीजिए कि अधिक कठोर खंडन की बातों से काम न लिया करें। ईसाई मतावलंबी तो सभ्य और सुशिक्षित हैं, वाद-प्रतिवाद से नहीं घबराते,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर यदि हिंदू या मुसलमान उत्तेजित हो गये तो उनके व्याख्यान बंद हो जायेंगे।"

और यह बात बहुत कुछ सत्य भी थी। कट्टर हिंदुओं से तो संघर्ष सदा ही होता रहता था, पर अनेक स्थानों पर मुसलमान भी उनके शत्रु बन जाते थे। काशी में प्रचार का जिक्र करते हुए उनके जीवन चरित्र में एक स्थान पर बतलाया है—

"काशी में स्वामी जी मुसलमानी मत की भी त्रुटियाँ दिखाया करते थे। इससे कुछ मुसलमान बहुत रुष्ट हो गये। एक दिन सायंकाल महाराज गंगातट पर आसन लगाये बैठे थे। उसी समय दैवयोग से मुसलमानों की एक मंडली भी वहाँ आ निकली। उस टोली में से कुछ मनुष्यों ने स्वामी जी को पहिचान कर कहा कि यह वही बाबा है, जो कुछ दिन पहले हमारे मजहब के खिलाफ व्याख्यान दे रहा था। उनमें से दो बलवान् व्यक्ति बहुत अधिक आवेश में आकर आगे बढ़े और स्वामी जी को उठाकर गंगा में फेंकने का प्रयत्न करने लगे। उन दोनों ने स्वामी जी की दोनों भुजायें कंधों के पास से दृढ़तापूर्वक पकड़ लीं और उन्हें झुलाकर गंगा में फेंकने लगे। उसी समय स्वामी जी ने अपनी बाहों को खूब कस लिया और उन दोनों के साथ पानी में कूद पड़े। वे कुछ देर तक तो उनको शिकंजे में कसे रहे, पर फिर दया करके उनको छोड़कर स्वयं डुबकी लगा ली। तब वे लोग अपने साथियों के साथ हाथ में ढेला लेकर किनारे पर खड़े रहे कि 'बाबा पानी से सिर निकालें तो उन्हें मारें ! पर स्वामी जी भी इस बात को समझते थे, इसलिए वे प्राणायाम द्वारा श्वास रोककर नदी के भीतर ही बैठे रहे। अँधेरा हो जाने पर उन उपद्रवियों ने समझ लिया कि वह बाबा पानी में डूब गया। इसलिए वे चले गये और स्वामी जी भी जल से निकलकर पुनः अपने आसन पर विराजमान हो गए।

पर ऐसे भी ईसाई और मुसलमानों की कमी नहीं थी, जो स्वामी जी में पूर्ण श्रद्धा रखते थे और जिन्होंने उनके सत्संग से प्रभावित होकर अपना कुछ सुधार भी किया था। अलीगढ़ में मुसलमानों के सबसे बड़े नेता सर सैयद अहमद खाँ स्वामी जी से भेंट करने कई बार आए। एक दिन उन्होंने कहा—"स्वामी जी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आपकी अन्य बातें तो युक्तियुक्त जान पड़ती हैं, पर यह बात कि थोड़े-से हवन में वायु का सुधार हो जाता है, युक्तिसंगत नहीं जान पड़ती।" स्वामी जी ने पूछा—"आपके यहाँ कितने मनुष्यों का भोजन बनता है ?" उत्तर मिला—"कोई पचास-साठ का।" स्वामी जी ने फिर कहा—"आपके भोजन में दाल कितने सेर पकती होगी ?" उन्होंने कहा—"कोई छह-सात सेर।" फिर पूछा—"इतनी दाल में कितनी हींग का छौंक दिया जाता होगा ?" उत्तर मिला—"माशा भर से कम तो हींग न होती होगी।" तब स्वामी जी ने सर सैयद को समझाया कि जिस तरह माशा भर हींग पचास आदमियों की दाल को सुगंधित बना देती है। उसी प्रकार थोड़ा-सा हवन भी वायु को सुगंधित बना देता है। "स्वामी जी के तर्क से सभी श्रोता प्रभावित हो गए और सर सैयद उनकी स्तुति करते हुए अपने घर गऐ।

इसी प्रकार ज्वालापुर में राव ओज खाँ ने स्वामी जी के पास आकर पूछा—"महाराज ! क्या गौ रक्षा सब जीव-रक्षा से अच्छी है ?" स्वामी जी ने कहा—"हाँ, गौ रक्षा सर्वोत्तम है और इसमें सबसे अधिक लाभ है। इसलिए गौ रक्षा सब मनुष्यों का कर्तव्य है।" ओज खाँ ने स्वामी जी के कथन को सत्य मानकर मांस खाना ही छोड़ दिया।

दानापुर (बिहार) में जोंस नामक गोरा स्वामी जी के पास आया और कुछ धर्मोपदेश सुनने की अभिलाषा प्रकट की। स्वामी जी ने कहा—"परमात्मा के रचे पदार्थ सबके लिए एक से हैं। सूर्य और चंद्रमा सबको समान प्रकाश प्रदान करते हैं। वायु और जलादि वस्तुएँ सबको एक-सी दी गई हैं। जैसे ये सब पदार्थ ईश्वर की देन हैं, सब प्राणियों के लिए एक से हैं, उसी प्रकार परमेश्वर प्रदत्त धर्म भी मनुष्यों के लिए एक-सा और समान होना चाहिए।"

स्वामी जी ने फिर जोन्स से प्रश्न किया—"भलाई क्या है ?" उसने कहा—"आप ही कृपा कर बताइए।" स्वामी जी ने कहा—"जिस कर्म से अधिकांश मनुष्यों का अधिक उपकार हो, उसे मैं भलाई मानता हूँ।" इस विचार को जोन्स ने भी स्वीकृत किया। तब स्वामी जी ने बड़ी योग्यता से यह समझाया कि—'गौ रक्षा' से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिकांश मनुष्यों को अत्यधिक लाभ होता है। इस उपदेश के प्रभाव से मि. जोन्स ने उसी समय 'गोमांस' त्याग की प्रतिज्ञा कर ली।

फर्रुखाबाद के भाषणों में भी, जिनमें कलेक्टर आदि प्रमुख राजकर्मचारी उपस्थित थे उन्होंने गौ रक्षा पर जोर देकर कहा—"गौहत्या से इतनी हानि हो रही है, परन्तु खेद है कि राजपुरुष इस पर कुछ भी ध्यान नहीं देते। इसमें हमारा ही अधिक दोष है। हम में एकता का सर्वथा अभाव है। यदि मिलकर गौवध बंद कराने का निवेदन करें, तो क्या नहीं हो सकता ? जो लोग गौदान करते हैं, वे भी हानि-लाभ को नहीं सोचते। भोले-भाले भाई समझ लेते हैं कि गौ संकल्प के करने से वैतरणी पार हो जायेंगे। वे मर जाते हैं और गौ पुरोहित देवता के आँगन में खूँटे से बँधी रहती है। प्रत्युत बार-बार कई स्थानों से संकल्प कराई जाती है। बहुत से ऐसे भी कुल-कपूत हैं जो तुरंत उसे कसाई के हाथ बेच डालते हैं।

स्वामी जी ने गौ संबंधी अंध विश्वास और हानिकारक रूढ़ियों के संबंध में जो कुछ कहा—वह बिल्कुल ठीक है। लोग गाय की वास्तविक उपयोगिता और उससे होने वाले आर्थिक लाभों को तो भूल गए हैं और केवल एक मात्र उसकी "पूँछ पकड़ कर वैतरणी पार होने" की बात उनको याद हो आती है। अहिंसा की निगाह से तो एक गाय ही क्या सभी अनाक्रमणकारी पशु सुरक्षा के अधिकारी हैं। किसी भी निरीह पशु को बिना कारण मारना एक पाप कर्म ही माना जायेगा। पर गाय और भैंस जैसे सर्वोपयोगी पशुओं की हत्या तो पाप ही नहीं है, समाज का भी अनहित करना है। भारतवर्ष में अभी तक दूध, दही, घी को आहार-सामग्री का सर्वोत्तम अंग माना जाता है, अतएव जो लोग उत्तम और उपयोगी दूध देने वाले पशुओं के विनाश का कारण बनते हैं। वे निःसंदेह समाज के बहुत बड़े अहितकर्ता माने जाने चाहिए।

हिंदू-समाज में दान का बड़ा महत्त्व है और सामान्य मनुष्य तो जो जितना दान करता है, उसे उतना ही बड़ा 'धर्मात्मा' समझते हैं। कितने ही पुराणों का अधिकांश भाग 'दान-महिमा' से ही भरा पड़ा है ? किस व्रत या तीर्थ में कितना दान देने से मनुष्य को स्वर्ग या मोक्ष प्राप्त होता है, इसका जिक्र एक नहीं सौ-दो सौ और इससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक बार किया गया है। पर वास्तव में इस समय यहाँ की दान-प्रणाली बिल्कुल बिगड़ गई है। तीर्थों के पंडा-पुजारी तो नवीन आगंतुकों के सम्मुख इस बात का विज्ञापन करते ही रहते हैं कि अमुक व्यक्ति ने यहाँ इतने हजार का दान दिया या इस प्रकार की सामग्री बाँटी। लोग भी ऐसी बातों से प्रेरित होकर जो कुछ दान करते हैं वह बड़ी धूमधाम और प्रदर्शन के साथ करते हैं, जिससे उनकी गणना भी दानियों में होने लगे। पर वास्तव में इस प्रकार नामवरी अथवा अहंकार की तुष्टि के लिए किया गया दान उत्तम नहीं होता और 'गीता' में इसे 'तामसी' श्रेणी का बतलाया गया है। स्वामी दयानंद भी अपने उपदेश से इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करते थे। एक भाषण में उन्होंने कहा—

"अन्न-जल का दान कोई भी भूखा-प्यासा मिले उसे दे देना चाहिये। ऐसा दान पहले अपने दीन-दुःखी पड़ोसी को देना चाहिए। पास के रहने वाले का दारिद्र्य दूर करने में सच्ची अनुकंपा और उदारता का प्रकाश होता है। इससे वाहवाही नहीं मिलती, इसलिए अभिमान को भी अवकाश नहीं मिलता। समीपस्थ दुःखी को देखकर और पीड़ित का अवलोकन करके ही दया, अनुकंपा और सहानुभूति आदि हार्दिक भाव प्रकट होते हैं। जो समीपवर्ती दीन-दुःखिया जन पर तो दया-भाव नहीं दिखलाता, किंतु दूरस्थ मनुष्यों के लिए उसका प्रकाश करता है, उसे दयावान् अनुकंपाकर्ता और सहानुभूति प्रकाशक नहीं कह सकते। ऐसे मनुष्य का दान बाहर का दिखावा और ऊपर का आडंबर है। दान आदि वृत्तियों का विकास दीपक की ज्योति की भाँति—समीप से दूर तक फैलना चाहिए।"

"यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि—'जो निर्धन जन अन्नादि का दान नहीं कर सकते—वे दूसरों को क्या दें ? उत्तर स्पष्ट है कि, जो अन्नादि का दान करने में असमर्थ हैं, वे अपने पड़ोसी आदि को कष्ट और क्लेश में सहायता देवें। निर्बलों का पक्ष ग्रहण करें। विपन्न और आधि-व्याधिग्रस्त जनों की सेवा करें। पर-पीड़ितों और व्याकुल मनुष्यों से प्रेम करें। उन्हें मीठे वचनों से शांति दें। ये सब दान हैं और आत्मा से संबंध रखने वाले हैं। ऐसे दान नित्यप्रति निर्धन जन भी कर सकते हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी जी का आशय यही था कि मनुष्य को दान किसी वास्तविक कष्ट पीड़ित या अभावग्रस्त व्यक्ति को देखकर स्वाभाविक रूप से देना चाहिए। दान पाने के लिए चारों तरफ फिरने वाले पंडा-पुजारियों और पेशेवर भिखारियों को दान देने का कोई महत्त्व नहीं और यह भी सर्वथा सत्य है कि धन का दान करने की अपेक्षा सेवा और सहायता का दान कहीं उत्कृष्ट है। पर हमारी सम्मति में तो इनसे भी उच्च कोटि का दान 'ज्ञान-दान' है। वास्तव में हमारे अधिकांश कष्टों का एक बड़ा कारण अज्ञान और अविद्या ही होता है। यदि कोई सज्जन सदुपदेश, सत्संग, सद्ग्रंथों द्वारा हमारे अज्ञान को दूर कर देता है तो यह एक ऐसा दान है, जिसकी तुलना किसी दान से नहीं की जा सकती, क्योंकि अन्न, वस्त्र, धन आदि के दान से हमारी कोई सामयिक आवश्यकता ही पूरी हो सकती है और कुछ समय बाद हमारे लिए फिर वही अभाव उपस्थित हो जाता है। पर यदि कोई हमारे अज्ञान, असमर्थता को दूर करके सुखी होने का सच्चा मार्ग दिखला देता है तो यह निस्संदेह एक महान् उपकार है।

अंध परंपराओं का निराकरण—

स्वामी दयानंदजी के जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य जाति में प्रचलित हानिकारक विश्वासों, कुरीतियों और रूढ़ियों को मिटाकर उनके स्थान में समयोचित लाभकारी प्रथाओं का प्रचार करना था। इसके लिए उन्होंने सबसे पहले "मूर्तिपूजा" को ही अपना लक्ष्य बनाया, क्योंकि उस समय इस संबंध में बड़ा अंध विश्वास उत्पन्न हो गया था, जिससे धर्म की हानि हो रही थी। अनेक संप्रदायों के "गुरूओं" और "आचार्यों" ने जनता की भेड़चाल को देखकर देवी-देवताओं के नाम पर तरह-तरह के पाखंड और जाल फैला रखे थे। लोग पाप-पुण्य के वास्तविक स्वरूप, संयम, शुद्धाचार, परोपकार, सेवा आदि सत्कर्मों को भूल कर केवल किसी देवता की मूर्ति के आगे मस्तक झुका देना और कुछ चढ़ावा चढ़ा देना मात्र को ही 'धर्म-पालन' समझने लग गए थे। इस कारण दिन पर दिन धर्म और जाति की अवनति होती जाती थी और समझदार व्यक्ति उससे उदासीन होते जाते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह दशा देखकर अन्य धर्म वाले हिंदुओं को अपने मत का अनुयायी बनाने की चेष्टा करने लगे थे। उस समय राज्य की शक्ति को अपनी सहायक समझकर ईसाई पादरी विशेष रूप से सक्रिय हो उठे थे और उन्होंने अर्द्ध सभ्य और पहाड़ी जातियों को ही नहीं, अनेक सुशिक्षित और उच्च वंशीय लोगों को भी अपने धर्म में दीक्षित कर लिया था। हिंदू-समाज पर इस तरह विपत्ति के बादलों को घहराते देखकर अनेक धर्मप्राण और समाज के हितैषी लोगों को मानसिक कष्ट हो रहा था। पर कार्य की कठिनता और कोई उचित मार्ग न सूझ सकने के कारण वे विशेष प्रयत्न न कर पाते थे।

स्वामी दयानंदजी के हृदय पर इस अवस्था को देख कर चोट लगी और वे सब प्रकार संकटों और भय की संभावनाओं का ख्याल छोड़कर इस दुरावस्था के सुधार का निश्चय करके कर्म क्षेत्र में उतर पड़े ! उन्होंने भली प्रकार अनुभव किया कि, हिंदू जाति जैसी प्रगाढ़ निद्रा में ग्रसित है, उसे जाग्रत् करना सहज नहीं है। इसकी निद्रा भंग करके सावधान करने के लिए जब तक कोई शक्तिशाली उपाय न किया जायगा, तब तक यह होश में न आयेगी और न अपना भला-बुरा समझकर अपने घर की रखवाली में प्रवृत्त होगी। इसलिए उन्होंने आरंभ से ही मूर्ति-पूजा, तीर्थ यात्रा, श्राद्ध आदि ऐसे विषयों की त्रुटियाँ दिखलाना आरंभ किया, जिनको लोग अनुचित महत्त्व देने लग गए थे और जिनमें स्वार्थी जनों के लोभ लालच के कारण तरह-तरह के दोष दिखलाई पड़ने लगे थे। यद्यपि इस प्रकार खंडन की बातों से आरंभ में लोग बहुत चौंके और स्वामी जी के लिए 'नास्तिक' 'अधार्मिक' 'कृस्तान' आदि अपशब्दों का प्रयोग करने लगे, पर इस 'खंडन' से स्वामी जी का वास्तविक आशय क्या था, यह स्वयं उन्होंने एक भाषण में बतलाया था—

"अनेक जन कहते हैं—कि आपके खंडन-परक व्याख्यानों से तो लोगों में घबराहट उत्पन्न हो जाती है। उनके हृदय भड़क उठते हैं। इसका परिणाम शुभ कैसे होगा ? भाई, जब रोग दूर होने में नहीं आता तो अच्छे वैद्य, देर से बढ़े दोषों को शांत करने और मल को बाहर निकालने के लिये विरेचक (दस्तावर) औषधियाँ दिया करते हैं। विरेचक औषधि पहले घबराहट उत्पन्न करती है। व्याकुलता लाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कभी-कभी उससे जी भी मचलाने लगता है। परंतु जब विरेचन होकर कुपित दोष शांत हो जाते हैं, तब प्रसन्नता-लाभ होती है, धीरे-धीरे वास्तविक पुष्टि प्राप्त हो जाती है। आर्य जाति में अनेक कुरीतियों के दोष और मिथ्या मंतव्यों के मल बढ़ गये हैं। उनके कारण यह इतनी रुग्ण हो गई है कि इसके स्नेहियों को इसके जीवन में संशय उत्पन्न हो गया है। लोग इसकी आयु के वर्षों को अँगुलियों पर गिनने लगे हैं। हमारे उपदेश आज विरेचक औषधि की भाँति, घबराहट अवश्य लाते हैं, परंतु वे जातीय शरीर के संशोधक और आरोग्यप्रद हैं। वर्तमान आर्य संतान हमें चाहे जो कहे परंतु भारत की भावी संतति हमारे धर्म-सुधार को और हमारे जातीय संस्कार को अवश्यमेव महत्त्व की दृष्टि से देखेगी। हम लोगों की आत्मिक और मानसिक नीरोगिता के लिए जो कुरीतियों का खंडन करते हैं, वह सब कुछ हित भावना से किया जाता है।"

स्वामी जी का उपर्युक्त कथन आज एक "भविष्यवाणी" की तरह यथार्थ सिद्ध हो रहा है। उनके प्रचार-कार्य के आरंभिक वर्षों में और आर्य समाज की स्थापना होते समय उनके विरोध और आक्षेपों का जो तूफान उठा था, आज उसका चिन्ह भी नहीं है। स्वामी जी ने जिन बातों का प्रचार किया था, उनमें से अधिकांश न्यूनाधिक अंशों में पूरी हो चुकी हैं, वरन् अन्य लोग उनसे भी बहुत आगे बढ़े चले जा रहे हैं। आज हिंदू-समाज में केवल थोड़े से पुराने ढर्रे के पंडा-पुजारियों को छोड़ कर कोई स्वामी जी के कार्यों को बुरा कहने वाला न मिलेगा, वरन् अन्य देशों के निष्पक्ष विद्वान् भी उनके लिए "हिंदू जाति के रक्षक" "हिंदुओं को जगाने वाले" आदि प्रशंसनीय विशेषणों का ही प्रयोग करते हैं। वास्तव में स्वामी जी उन "महापुरुषों" में से थे, जो किसी जाति की अवनति होने पर उसके उद्धार के लिए जन्म लिया करते हैं। ऐसे पुरुषों में ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, पक्षपात आदि क्षुद्र भावनाएँ नहीं होती, वरन् वे जो कुछ करते हैं वह मानव मात्र की कल्याण भावना से ही होता है। यह तथ्य स्वामी जी के एक लेखांश से भी प्रकट होता है—

"यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में पाये जाते हैं। यदि वे पक्षपात छोड़कर सर्व-तंत्र सिद्धांत को स्वीकार करें, जो-जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बातें अनुकूल हैं और जो बातें बर्तावें एक-दूसरे के विरुद्ध पाई जाती हैं, उनको त्याग कर परस्पर प्रीति से बर्तें-बर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित हो जावे। विद्वानों के विरोध से ही अविद्वानों में विरोध बढ़ कर विविध दुःखों की वृद्धि और सुखों की हानि होती है। यह हानि स्वार्थी मनुष्यों को प्यारी है, पर इसने सर्वसाधारण को दुःख में डुबो दिया है।"

"जो सज्जन सार्वजनिक हित को लक्ष्य में धरकर कार्य में प्रवृत्त होता है, उसका विरोध स्वार्थी जन तत्परता से करने लग जाते हैं। उनके मार्ग में अनेक प्रकार की विघ्न-बाधायें डालते हैं। परंतु "सत्यमेव जयते नानृतम्" के अनुसार सर्वदा सत्य की विजय और असत्य की पराजय होती है। सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत हो जाता है। इस दृढ़ निश्चय के अवलंबन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन नहीं होते।"

स्वामी जी केवल हिंदुओं के ही अंध विश्वासों का खंडन नहीं करते थे, वरन् संसार के अन्य धर्मों की भ्रमपूर्ण धारणाओं के विरुद्ध भी निर्भयतापूर्वक बोलते थे। पर इसमें भी उनका भाव द्वेष अथवा पक्षपात का नहीं रहता था। इसका स्पष्टीकरण करते हुए उनके लेख में कहा गया था—"यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इसके मतमतांतरों की झूँठी बातों का पक्षपात किये बिना यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसा ही व्यवहार दूसरे देश के मजहब वालों के साथ करता हूँ। मेरा मनुष्यों की उन्नति का व्यवहार जैसा स्वदेशियों के साथ है वैसा ही विदेशियों के साथ है। सब सज्जनों को इसी प्रकार बर्तना योग्य है। यदि मैं किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के मतवादी अपने मत का मंडन और प्रचार करते है और दूसरे मतों की निंदा तथा हानि करते हैं, वैसा ही मैं भी करता, पर ऐसा करना अमानुषी कर्म है। जैसे बलवान् पशु निर्बलों को दुःख देते हैं और मार डालते हैं, ऐसा ही काम यदि मनुष्य-तन पाकर भी किया तो यह मानुषी स्वभाव के विपरीत है, पशुओं के सदृश है। जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहा जाता है और जो स्वार्थवश पराई हानि पर तुला रहता है वह तो मानो पशुओं का भी बड़ा बंधु है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी जी ने हिंदुओं की निद्रा भंग के जिस लक्ष्य को सम्मुख रखकर प्रचार कार्य आरंभ किया था, उसमें वे असफल हुए अथवा उससे समाज की हानि हुई—यह कोई नहीं कह सकता। इधर स्वामी जी ने लोगों के मूढ़ विश्वासों पर निर्ममता से प्रहार किए और उधर लोगों ने भी उनके वास्तविक आशय को न समझकर उन पर अपशब्दों तथा ईंट-पत्थरों की वर्षा की, पर अंत में दोनों अपनी स्थिति को समझ गये और बाद में आर्य-समाज द्वारा सुधार का काम नियमित रूप से होने लगा। आज हवन, यज्ञ, वेद-प्रचार, स्त्री शिक्षा, विधवा-विवाह, अस्पृश्यता-निवारण आदि अनेक सुधारों को सनातन धर्म सभाएँ स्वयं करने लग गई हैं। सन् १९२२-२३ में जब शुद्धि आंदोलन ने जोर पकड़ा तब बड़े पुराने पंडितों ने उस कार्य में सहयोग दिया और विधवाओं को विधर्मियों के चंगुल से बचाने के लिए खुले आम विधवा-विवाह का समर्थन करने लगे। माननीय मालवीय जी जैसे प्रमुख सनातनी नेता ने गंगा तट पर बैठकर हजारों अछूतों को मंत्र-दीक्षा दी। गाँधी जी भी अपने को सनातन धर्म का अनुयायी ही मानते थे, पर उन्होंने सभी हानिकारक परंपराओं और रूढ़ियों को इस प्रकार हटाया कि उनकी जड़ बहुत अधिक हिल गई और आज सौ वर्ष पहले की अपेक्षा सुधार-कार्य अपने आप तीव्र गति से हो रहा है।

पर यह सब होते हुए भी इस कार्य में स्वामी जी का जो योगदान है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। हम इससे इनकार नहीं कर सकते कि आज हम 'धर्मक्षेत्र' में जो प्रगति देख रहे हैं, उसमें स्वामी जी ने भी कम त्याग और बलिदान नहीं किया है। यद्यपि इससे पहले भी राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, श्री रानाडे, विवेकानंद आदि ने समाज-सुधार का कार्यारंभ किया था, पर उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब जैसे हिंदी प्रांतों और गुजरात में इस प्रवृत्ति को जन्म देने और जड़ जमाने का श्रेय अधिकांश में स्वामी दयानंद जी को ही है।

प्राचीन तथा नवीन का संघर्ष—

किसी ग्रामीण व्यक्ति ने स्वामी जी से वार्तालाप होते समय कहा था कि— "आप तो हमारी मूर्तियों का खंडन करते हैं, आपकी बात कैसे मानें।" स्वामी जी ने अपनी वाक्‌टुता द्वारा तुरंत उत्तर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया—"मैंने तो कभी मूर्ति का खंडन नहीं किया, मैं तो 'मूर्ति-पूजा' का खंडन करता हूँ।"

इस उत्तर में स्वामी जी का दृष्टिकोण पूरी तरह समाया हुआ है। वे हिंदू-समाज को अपने से पृथक् या विरोधी तनिक भी नहीं मानते थे और न कभी उसकी अकल्याण भावना कर सकते थे। वे तो अपने को सच्चा हिंदू ही मानते थे और इसलिए हर प्रकार की कठिनाई सहकर अपने धर्म-भाइयों के सुधार की चेष्टा करते थे। वे तो वेदों को प्राचीन और धर्म का मूल स्रोत जानते हुए, पुराणों के बजाय उन्हीं का अनुकरण करने का उपदेश देते थे, पर आजकल ऐसे सुधारकों अथवा आंदोलनकारियों की भी कमी नहीं, जो भारतीय धर्म का पूरी तरह से उच्छेद करने का ही प्रतिपादन करते हैं। इस दृष्टि से स्वामी जी को हिंदुओं का अहितकर्ता तो किसी प्रकार कहा ही नहीं जा सकता। यदि उनका दृष्टिकोण कुछ संप्रदायवादी पंडित-पुरोहितों से नहीं मिलता था और वे प्राचीन परंपरा में समयानुकूल परिवर्तन करने की सलाह देते थे तो इसको कोई बुरा नहीं कह सकता। हिंदू-धर्म जैसे विशाल और प्राचीन संगठन में मतभेद और झगड़ों का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। हजार-डेढ़ हजार वर्ष पहले हिंदू-धर्म के दो अंग-शैवों और वैष्णवों में जिस प्रकार धार्मिक कलह हुई थी और उसके फलस्वरूप जैसे पारस्परिक अत्याचार हुए थे, उनकी तुलना में पिछले वर्षों का सनातनी और आर्य समाजियों के बीच का वैमनस्य कुछ भी न था। इसी प्रकार एक ही ईसाई धर्म की दो शाखाएँ होते हुए भी रोमन कैथेलिक और प्रोटेस्टेंट के मध्य जो अमानुषी और रोमांचक हत्याकांड किए गए, मुसलमानों में सुन्नी और शिया अभी तक जिस प्रकार खून खराबी करते रहते हैं, स्वयं शियाओं में भी ईरान में बहाई-समाज वालों के साथ जैसा बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया है, उस सबको देखते हुए स्वामी जी के प्रचार और संगठन कार्य के संबंध में तो प्रशंसा के अतिरिक्त और कुछ कहा नहीं जा सकता।

रह गई मूर्ति-पूजा, तीर्थ यात्रा, पितृ श्राद्ध आदि की बात, तो अब उनका मूल रूप कहाँ रह गया है ? जैसे वैदिक यज्ञों में समय के प्रभाव से विकृति उत्पन्न होते-होते, वे पूरी तरह "हिंसा-आयोजन" बन गये थे, उसी प्रकार मूर्तिपूजा भी शिव-योग और विष्णु-भक्ति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभ्यास का एक साधन होने के बजाय कालक्रम में बड़े-बड़े धर्मोत्सवों, छप्पन भोगों और आरती तथा पूजा के नाम पर बड़ी-बड़ी धनराशि के अपव्यय का कारण बन गई। अगर लोगों का अनुमान सही हो तो आजकल भारत भर के मंदिरों में २५० से ५०० अरब अधिक की संपत्ति लगी है और उनका खर्च भी प्रति वर्ष १० से २० अरब से कम न होगा। इतनी बड़ी धनराशि का यदि विवेकपूर्वक धर्म-प्रचार और समाज-सुधार के ठोस कार्यों में खर्च किया जाए और लाखों मुफ्तखोरों की जो पलटन उन मंदिरों के सहारे पल रही है, उसे उपयोगी कामों में संलग्न कर दिया जाए तो क्या दस-पाँच वर्ष में ही हिंदू धर्म तथा हिंदू-जाति की काया पलट न हो जाए ?

इसीलिए व्यावहारिक दृष्टि से हम स्वामी जी के प्रचार-कार्य को बुरा नहीं कह सकते। पर सिद्धांत की दृष्टि से हम यह कह सकते हैं, कि अपने जीवन को धार्मिक, संयमपूर्ण और पारमार्थिक बनाने की दृष्टि से मूर्तिपूजा द्वारा भी बहुत कुछ प्रगति की जा सकती है। यह ठीक है कि वेदों में मूर्तिपूजा का जिक्र नहीं है, पर इस बीसवीं शताब्दी में कोई शिक्षित और सभ्यतानुकूल जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति पूर्णतः वैदिक समय के रहन-सहन के अनुसार निर्वाह नहीं कर सकता। इस समय यंत्र-युग है और उस समय मनुष्य अधिकांश समय प्रकृति की गोद में रहता था। इन दोनों का सामंजस्य कर सकना प्रायः असंभव ही है। शोध करने वाले विद्वानों के कथनानुसार मूर्ति-पूजा बौद्धकाल के बीच में ही आरंभ हुई और आधुनिक ढंग की मूर्तिपूजा तो रामानुजाचार्य, रामानंद, वल्लभाचार्य आदि के उपदेशों से प्रचलित हुई है। पर यह नहीं कहा जा सकता कि नवीन होने से उसका कोई उपयोग ही नहीं है। इसी मूर्ति-पूजा के माध्यम से इन कुछ सौ वर्षों के भीतर तुलसीदास, चैतन्य, समर्थगुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद आदि युगांतकारी दैवी विभूतियाँ उत्पन्न हो चुकी हैं। यह कहने का साहस कोई समझदार व्यक्ति नहीं कर सकता कि ये संत किसी भी अन्य महापुरुष की अपेक्षा कम थे अथवा उन्होंने जाति और धर्म की कम सेवा की थी। यदि स्वामी दयानंद जी ने हिंदू जाति को जगाने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महान् कार्य किया, तो गोस्वामी तुलसीदास और रामदास ने हिंदू जाति के अस्तित्व की ही रक्षा की।

मूर्ति को भगवान् कहना अनेक व्यक्तियों में कुछ भ्रम पैदा कर देता है और उसी के कारण कुछ लोगों को आक्षेप का अवसर मिल जाता है। तथ्य यह है कि मूर्ति द्वारा उपासना करना भी अन्य अनेक धर्म-मार्गों की तरह ईश्वर प्राप्ति का एक साधन है। साथ ही यह भी सत्य है कि हिंदू धर्म के पुराने आचार्यों ने मूर्तिपूजा को मानते हुए भी, उसे सर्वश्रेष्ठ साधन नहीं बताया है। शास्त्रों में एक स्थान पर कहा गया है—**"अप्सु देवा बालानाम् दिवि देवता मनीषिणाम्।"** अर्थात् "बालबुद्धि वाले सामान्य लोगों के लिए तीर्थ और मूर्ति आदि स्थूल पदार्थ ही ईश्वर हैं और जो विद्वान् लोग हैं वे दिव्य शक्तियों को ईश्वर समझते हैं, पर ज्ञानियों की दृष्टि में एक मात्र उनका आत्मा ही ईश्वर होता है।"

कुछ भी हो—स्वामी दयानंदजी ने ऐसे समय में हिंदू-जाति को उठाने का कार्य किया, जब उनकी अवस्था बड़ी निर्बल और अस्तव्यस्त हो रही थी। यदि उस समय वे इस तरफ ध्यान न देते और अपने तन-मन तथा समस्त योग्यता को इसके लिए अर्पण न कर देते तो हिंदुओं को विधर्मियों से बहुत अधिक दब जाना पड़ता, जिसका परिणाम शोचनीय ही होता। इसी तथ्य को दृष्टिगोचर रखते हुए श्रीमती ब्रह्मवती नारंग ने स्वामी जी के जीवन-कार्यों का वर्णन करते हुए ठीक ही लिखा है—

"भारत पर स्वामी जी के महान् रिण हैं। अपने छोटे से जीवन में उन्होंने देश के एक कोने से दूसरे कोने तक फैले हुये "पाखंड एवं कुप्रथाओं" का निराकरण करके वैदिक धर्म का नाद बजाया। 'गौबध' बंद कराने का प्रयत्न किया। 'बाल विवाह' की प्रथा का विरोध करके लोगों को 'ब्रह्मचर्य' का महत्त्व बताया। स्थान-स्थान पर गुरुकुल खुलवाकर 'संस्कृत शिक्षा' का प्रचार किया। 'विधवा विवाह' की प्रतिष्ठा की और 'मद्य-मांसादि' का घोर विरोध किया। स्त्रियों को स्वतंत्रता दिलाई, राजनीतिक स्वतंत्रता पर बल दिया और हर प्रकार से आर्य-जाति को फिर से उसके अतीत के गौरव पर स्थापित करने का प्रयत्न किया।"

मुद्रक युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्द्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org